International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197
Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 1048-1049

'स्वर्ग विराग' का वस्तूगत मूल्यांकन

नरेश कुमार
हिन्दी प्रवक्ता, राजकीय मॉडल महाविद्यालय, 'महानपुर', जम्मू और कश्मीर, भारत।

प्रस्तावना

'स्वर्ग विराग' कश्मीर के युवा कवि मुदस्सिर अहमद भट्ट द्वारा रचा गया कविता संग्रह है। मुदस्सिर अहमद का यह प्रथम कविता संग्रह है। इसका प्रकाशन सन् 2016 में हुआ। मुदस्सिर अहमद कश्मीर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में पीएच. डी. के शोध छात्र हैं। कविताओं के साथ–साथ कहानी लेखन में भी रूचि रखते हैं। लेकिन कोई कहानी संग्रह अभी प्रकाशित नहीं करवाया है। कश्मीर में कविता और फिर हिन्दी कविता अपने आप में चुनौती भरा कार्य है लेकिन मुदस्सिर इसके लिए तत्पर नज़र आते हैं। 'स्वर्ग विराग' अपने आप में एक त्रास्दी को बयान करता हुआ पद है। स्वर्ग अर्थात् कश्मीर। दुनिया में अपने प्राकृतिक संपदा और सौंदर्य के कारण जन्नत के नाम से जाना जाने वाला कश्मीर। विश्व भर के लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र कश्मीर। जिसे हर कोई देखना चाहता है। वहां बसने वाला कवि स्वर्ग से अनुराग रखते हुए भी विराग की बात करने को अभिशप्थ हो गया है। कश्मीर जो राजनीतिक शास्त्र में एक समस्या का नाम है। राजनेता और मीडिया के लिए रोटियां सेकने का चुल्हा बन चुका है जिसकी आग में स्वर्ग अब नरक से बद्दतर हो गया है। अलगाववाद, आतंकवाद और राष्ट्रवाद के बीच फंसा कश्मीर अपनी वास्तविक पहचान खोकर क्या हो गया है यह एक विचारणीय प्रश्न है। राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त की बड़ी प्रसिद्ध पंक्तियां हैं –

''हम क्या थे, क्या हो गये, क्या होंगे अभी
आओ मिलकर विचारें यह समस्याएं सभी''

मुदस्सिर की कविताएँ भी इस सवाल पर विचार करने को विवश करती हैं कि स्वर्ग से विराग की मनोस्थिति तक कैसे पहुँच गये ? इकसठ कविताओं के इस संग्रह में नरक होते स्वर्ग का त्रास्द चित्रण हुआ है। यहां पर ठीक उसी कश्मीर के दर्शन होते हैं जिसे कश्मीर के प्रसिद्ध लेखक – कवि निदा नवाज़ ने अपनी डायरी में 'सिसकियाँ लेता स्वर्ग' कहा है। यह सिसकियाँ सुननी–सुनाई नहीं हैं, हवा – हवाई नहीं हैं। कश्मीर में रहकर आँखों देखी और कानों सुनी हैं। अपनी कविता 'जलती सडंकों पर' में मुदस्सिर ने लिखा है :–

''समुद्र को सूखा देखा है
पर सूखी आँखें कभी नहीं देखी हैं।''[1]

स्वर्ग विराग, आतंकवादी, शिकारे मे, कश्मीर बंद, यही स्वर्ग है, बारूदी बदल, कब्रिस्तान, निर्दोष, चील और चिड़िया, जलती सड़कों पर, गहरे अंधकार सा, अब न बहेगा और रक्त, बर्फ के तल से, प्रेम यहां पाप है, कल की घटना और आज की कविता, अपने – अपने हिस्से की मिट्टी, लाली लाल है, अंधेरा आदि कविताएँ कश्मीर के अंधेरे समय को उजागर करती हैं। एक आम कश्मीरी की दिनचर्या क्या बन चुकी है, आतंकवाद, अलगाववाद और तथाकथित राष्ट्रवाद की गोलबंदी का शिकार एक आम कश्मीरी कैसे जीता है ? कैसे वह मौत का तांडव देख रहा है। वह कश्मीर जहां बोद्धों की सभआएँ हुआ करती थीं जहां पर संस्कृत के आचार्यों ने काव्य शास्त्र और महाकाव्य लिख कर दिये उस कश्मीर में बसने बाले कवि ने स्वर्ग पर मुग्ध होकर कविताओं को प्राकृतिक शोभा से भर देना चाहिए था पर वह कवि स्वर्ग से विराग की बात कर रहा है और विराग की बात करे भी क्यों न ? पिछले पच्चीस – तीस बरसों से कश्मीर में बारूदी हवाएँ चल रही हैं और इन हवाओं में सियसत ही फली – फूली है आम आदमी तो बस चिथड़े– चिथड़े हुआ जा रहा है। इन बारूदी हवाओं में ही पैदा होकर जवान हुआ कवि जिसने रक्तपात ही देखा, उत्पात ही देखा वह सजी सजाई सुंदर कविता नहीं लिख सकता उसकी कलम रक्त और आंसुओं को चिन्हे बिना नहीं रह सकती कवि सच ही लिखता है, ''सुना है बच्चपन से ही / गोलियों का संगीत/ और विस्फोट की ग़ज़लें / हर एक नये गायक के साथ/ बजते रहे बारूदी बैड/ अब भी देखता हूँ/ मेरी ही लाश निकल रही है/ हर गली/ स्वर्ग की वादियों में।''[2]

यह वह सच है जिसे कोई मीडिया नहीं दिखाता कि स्वर्ग की वादियों में क्या चल रहा है। इतिहास गवाह है कि जब सच दबाया जाता है तो वह और और प्रस्फुटित होता है। वह अपने लिए राह बना ही लेता है। साहित्य और सच का आदिम रिश्ता है। सच ने जब भी अभिव्यक्ति पाई है तो पीड़ा बनकर पाई है। यही स्वर्ग है कविता में कवि ने बर्फ गिरते एक बिम्ब को चुना है तमाम चोटियां बर्फ से ढकने लगी हैं और इसी के साथ –

''ढक रहा है
बिखरा खून भी
ढक रहा है हर पाप
यही स्वर्ग है''[3]

कवि व्यथित है और कवि की यह व्यथा एक यथार्थ को खड़ा कर रही है। लोगों के ज़हन में कश्मीर की जो गलत या काल्पनिक छवि तैयार की गई है या की जा रही है उस छवि को तोड़ने का काम करती नज़र आती हैं यह कविताएँ। मुदस्सिर की कविताओं में प्रमुख स्वर कश्मीर की पीड़ा का है। कुछ कविताएँ लोकतंत्र पर सवाल करती नज़र आती हैं तो कुछ धार्मिक कट्टरवाद पर। धर्म का राजनीतिकरण मानवता के लिए कितना घातक है इस बात को कवि अच्छे से समझ गया है। धर्म को तमाम धार्मिक ठेकेदारों के हाथों से छीन लेना ज़रूरी है नही तो मानवता का पेट सूख जाएगा। कश्मीर को अगर किसी चीज ने कश्मीर नहीं रहने दिया तो वह दो ही चीजें हैं एक राजनीति दूसरी धर्म और मुदस्सिर इन

दोनों पर सवाल खड़े करता है इन दोनों कारणों से आंखे नहीं चुराता। धर्म के राजनीतिकरण का सबसे बुरा परिणाम मानवता को ही झेलना पड़ता है–

''बिकती जब धर्म की रोटी
सूख जाता है
मानवता का पेट''[4]

मुदस्सिर एक पढ़े लिखे युवा हैं। पढ़े–लिखे युवा का आज सबसे बड़ा दर्द बेरोजगारी और रिश्वतखोरी है। बेराजगारी और भ्रष्टतंत्र में रिश्वतखोरी को झेलते युवाओं की पीड़ा इस संग्रह का गोण स्वर है किंतु है प्रखर। हिन्दी कविता के युवा स्वर कृष्णधर शर्मा की काव्य पंक्तियां बड़ी सुंदर हैं जो आज के युवाओं के त्रास्द जीवन को बडे मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करती हैं कि –

''न जाने कितने ही जूतों के घिस गये तले
फिर भी मैं और चलने को तैयार हूँ
क्योंकि मैं बेरोजगार हूँ''

मुदस्सिर के स्वर्ग विराग में केवल गोला बारूद और राजनीति का दंश नहीं है उसमें बेरोजगारी का दंश भी उतना ही गहन है और भ्रष्टाचार का भी। कैसी चाय ?, कतार, धंधा बेरोजगारी का, प्रेमचंद का होरी आदि कवितओं में यही स्वर प्रमुख है। जिसमें कतारों में धके खाता युवा अपनी गरीबी और प्रतिभा को कोसता नज़र आता है।

''कितने ही दिन
इतने हुए
लेकिन एक दिन
फिर वही कतार
कहते सुना है
लोगों को देखा यह है बेरोज़गार''[5]

कविता एक ऐसी विधा है जो अपने अंदर कई अर्थ लिए होती है। स्वर्ग विराग की कविताएँ कला की दृष्टि से भले ही अभी परिपक्व न हों लेकिन उनकी वस्तू की उपज यथार्थ की मिट्टी से हुई है अपने समय और समाज को मुदस्सिर देख ही नहीं रहे हैं उसको शब्दों में बांधने का भी पूरा प्रयास कर रहे हैं इसके लिए किसी भी चुनौती को लेने के लिए तैयार बैठे हैं। सत्ताओं को चुनौती देने से भी नहीं चूकते हैं वह जानते हैं कि कलम ही एक ऐसा हथियार है जो अपने लोगों को इंसाफ दिला सकता है। कलम ही है जो अपने साथियों अपने लोगों की पीड़ा को आवाज दे सकती है। उनकी कविता उन साहित्यकारों को भी कठघरे में खड़ा करत है जो पुरस्कारों के पीछे भाग रहे हैं और सच से मुंह फेर रहे हैं। सच–1,2,3 आदि कविताओं को इसी संदर्भ में देखा जा सकता जिनमें कवि कहता है कि, '' चाहे कितना भी तुम / रचते रहो पांडुलिपियाँ / लिखते तो झूठे ही हो।''[6]
कवि युवा हो और कविताओं में प्रेम न हो ऐसा असंभव पर्याय होगा पर स्वर्ग विराग में प्रेम का रोमानीपन कहीं नहीं है। लहुलुहान मानवता के बीच जीता कवि इस स्वग से चले जाने की बाते करता है। चलो भाग चलें, यह कहानी प्रेम की, कहाँ चले, परिचित थी और दो बातें महबूब से आदि कविताओं में प्रेम का स्वर सुना जा सकता है पर यह प्रेम भी यथार्थ के धरातल को छोड़ नहीं पाता प्रेम यहां पाप है कविता का एक उद्धाहरण देखें–

''क्योंकि हम
बारूद की कोख में पले हुए हैं ?
शोषन के लहू से सने हुए हैं
और विद्रोह की ज्वाला में जने हुए हैं
इसलिए प्रेम यहाँ पाप है।''[7]

तमाम तरह की त्रास्दी के बीच रहते हुए भी कवि प्रेम की कहानी कहना चाहता है, प्रेम को रचना चाहता है भूख को रचना चाहता है वह कहता है कि,'' भले ही मेरा लिखना / रोटी न दे / भूख तो दे।'[8]
उपसंहार रूप में हम यह कह सकते हैं कि स्वर्ग विराग की कविताओं की वस्तू कटू यथार्थ की देन है जिसमें बारूद से घायल कश्मीर की सिसकियाँ हैं तो घर में पुत्रों द्वारा प्रताड़ित मां बाप की सिसकियाँ भी। निर्दोष युवाओं की व्यथा भी है अपनी मिट्टी की प्रति अनुराग है तो भ्रष्ट व्यवस्था के प्रति आक्रोष भी है। कवि सीमाओं के बंधन से मुक्त होना चाहता है चाहे वो सीमाएँ व्यक्तिगत हों या क्षेत्रीय। राजनीतिक बंटवारों से कवि मुक्ति चाहता है।

''नहीं बंटती वायु
आकाश नहीं बंटता
चलो चलें आकाश पर
जहां न सीमा है
न युद्ध है
न रक्त है
न रक्तपात है।''[9]

कवि की इन पंक्तियों को पढ़ते ही दुष्यंत का यह शेर याद आ जाता है –

''यहां दरख्तों के साये में धूप लगती है
चलो यहां से चलें और उम्र भर के लिए।''

संदर्भ

1. मुदस्सिर अहमद भट्ट, स्वर्ग विराग, पृ.35
2. वही, पृ.20
3. वही, पृ.18
4. वही, पृ..22
5. वही, पृ. 79
6. वही, पृ. 57
7. वही, पृ. 54
8. वही, पृ.93
9. वही, पृ.49